

ह पापह पापक हर्षः पापनाशकः पृथुः शाहि जीपुत्रः नीलाकः सर्वपापह नरव ॥ १ ॥

संवर १५१ आख्या ८ वे १५१ नाज

3413

मोनाल नागलोके च विवरे व ५ वा न ले शक्ति वि ३०

ASHA ARCHIVES

नृपपुत्रमीवन

२९९

स्वरनाली पुता वि ५०

जनं समर्पयामि ॥ पूजां हविषा नमो विभो ॥ उं यद्गुरुर्दयति ॥ पूर्य राज
नं समर्पयामि ॥ ॥ वाक्म (व) नाचम्य ॥ सूर्यार्घ्यं कात्रयत् ॥ उं अघादि ॥ वा
क्म ॥ यजमानो नामिति ॥ उं अहम् ॥ पूर्य नमः ॥ ॥ अर्घ्यं यागसल्लख
नय ॥ उं ॐ मभं व ॥ गुननमस्कारं ॥ उं अखलुमलुलाकारं चार्पय नमः
यत्री ॥ नमो दं दर्शितं यन नमो श्रीगुनव नमः ॥ ॥ न्यासः ॥ उं स्वस्ति नमो

चरुट ॥ उं दवीवत्र कामिनी हृदयाय नमः ॥ उं मिश्रवन्धमथ नो नित्रम
ह्याहो ॥ उं ॐ लाक्ष्मिनामनी निखाये वोषट् ॥ उं दगदि ग्वायुर्वर्गमिः
वीकवत्रायट् ॥ उं अ (ह) वलुमथनाय नो गुणाय वोषट् ॥ उं स्वस्ति नमः
अस्मा यरुट् ॥ एवमज्ञ न्यासः ॥ अर्घ्यं याग पूजा ॥ षड्जन ॥ उं हृदयादि ॥
॥ १ ॥ धूनिरुतिकन ॥ अस्मयूजाय नमः पूषादि ॥ ॥ नमो दानार्जन ॥

॥ उं नमो वल्लभाय ॥ उं सफर्युं उनि ॥ उं अशोयस्तथा ॥ ॐ तिद्वागर्जनी ॥
 तता विष्णवे नमः ॥ उं स्वस्ति नमः ॥ उं श्रीश्वर ॥ उं (गो) र्थे नमः ॥
 उं पावकाना ॥ उं पार्थिवे नमः ॥ उं ॐ मानूदाय ॥ उं उमाये नमः ॥ उं
 अयस्वस्त नमः ॥ उं गिरिस्तुताये नमः ॥ उं स्वस्ति नमः ॥ उं ॐ ॥ उं ॐ ॥
 ॥ उं यस्मिन्नुच ॥ उं विष्णवे नमः ॥ उं द्यामालं स्वीनक्त त्रिद्विमादि ॥ ॐ श्री

ॐ अनाद्यनि ॥ ॐ नानादवी ॥ ॐ कयान्विष्ट ॥ ॐ कर्तृकृन्त ॥ ॐ नाश्रयसू ॥
ॐ तातारमिष्ट ॥ ॐ अग्निर्मूर्द्धा ॥ ॐ यमनदहं ॥ ॐ यन्त्रदवी ॥ ॐ ॐ मम ॥ ॐ
तव वायु ॥ ॐ कूविदं ॥ ॐ तमीग्ननी ॥ ॐ पीतिपदा ॥ ॐ वक्ष्यस्तनी ॥ ॐ गदा
पतिया ॥ ॐ गदा नात्वा ॥ ॐ वलि ॥ ॐ नभावहू ॥ ॐ ग्रास ॥ ॐ आर्य (गोश) कल
नया ॥ ॐ अजिष्ट ॥ ॐ दूर्ग ॥ ॐ जातवदस ॥ ॐ सूर्य ॥ ॐ आकृष्ट ॥ ॐ गिर ॥ ॐ नमः

पूर्वक कामन आडमामहं प्रतीत्यर्थं सुकान्तिव तमहंक निधु ॥ ॥ नमो
 धर्मनिप निधन स्नान कृष्ण लज्जु सनयाय ॥ कृष्ण लज्जु ॥ कृष्ण लज्जु
 दाव लिगन ॥ ॥ नमो सायाव न्यासया दावावयात कं ॥ उं हृदयाय न
 मः ॥ य उं (मन ॥ वायुवन अर्घया गृह्यायाय ॥ स्नान नम ॥ उं ग (मन
 यमून चैव (गोडावा नन स्वनि नमर्धे सिन्धु कावे त्रिजल सिन्धु नि
 धीरुव ॥ अर्घया गृह्यालं खन हाय ॥ धर्मनिपनि ॥ उं स्वस्ति नमः ॥ उं

पूर्व २

उरुत्र सिखत्र जात नि ॥ ॥ नमो द्वात्रयूजर्न ॥ स्नानं तन ॥ उं पूर्व
 द्वात्राय नमः ॥ उं नान्दिन नमः ॥ उं महाकालाय नमः ॥ उं हृदि नमः ॥
 उं गवय तथ नमः ॥ दधि (गो ॥ उं वृषाय नमः ॥ उं स्कन्दाय नमः ॥ पश्चि
 म ॥ उं दधौ नमः ॥ उं चतुर्थे नमः ॥ उरुत्र ॥ उं आध्यात्रेण कथे नमः ॥ उं
 नकासाय नमः ॥ उं कन्दाय नमः ॥ उं नालाय नमः ॥ उं पद्माय नमः ॥ उं
 यज्ञाय नमः ॥ उं कर्माय नमः ॥ उं कर्माय नमः ॥ उं धर्माय नमः ॥ उं

ॐ नमः वायवाय तीसहि तायनमः ॥ ॐ महाद वायम नान्नीसहि ता
यनमः ॥ ॐ रुवाय वागीश्वरीसहि तायनमः ॥ ॐ सर्वाय वामन कि सहि ता
यनमः ॥ ॐ महेश्वराय अम्बिकासहि तायनमः ॥ ॐ शुभकाय कात्यायनी
सहि तायनमः ॥ ॐ मीलिनचन्द्र (शिव) तीसहि तायनमः ॥ ॐ स्कानवं महाद
वीसहि तायनमः ॥ ॐ अष्टमूर्त्य ष्ठीश्वरीसहि तायनमः ॥ ॐ निवायरुगव
तीसहि तायनमः ॥ ॐ ष्ठशाय पनालकि सहि तायनमः ॥ ॐ पननात्मनः श्री

सहि तायनमः ॥ ॐ उग्रयचिन्तामती सहि तायनमः ॥ ॐ सर्वशायिने सखा
नीमूर्त्य नमः ॥ ॥ ॐ मृगदायनमः ॥ ॐ यक्षदायनमः ॥ ॐ सामवेदा
यनमः ॥ ॐ अथर्ववेदायनमः ॥ ॥ मधुसू ॥ ॐ स्वस्तीने नमः ॥ ॐ (ग) मा
रुदिने नमः ॥ ॐ वाक् (वे) नमः ॥ ॐ वाक् (ग) यनमः ॥ ॐ अमरुदायन
मः ॥ ॐ वडवायनमः ॥ ॐ पापिने नमः ॥ ॐ स्वस्तीनी दवे नमः ॥ ॐ गंगायने
मः ॥ ॐ यमूनायने नमः ॥ ॐ (ग) दावये नमः ॥ ॐ सनस्वने नमः ॥ ॐ नर्मदाय

नमः॥ॐ सिद्धवं नमः॥ॐ कार्त्तिके नमः॥ॐ वाग्देव्यै नमः॥ॐ आवाहनादिचन्द्र
 नाक्षत्रपूजनमः॥ ॥ ततः कलनापूजा॥ॐ संपूर्णकलनाय नमः॥ॐ मृत्पू
 जनाय नमः॥ॐ अमृतीश्वराय नमः॥ॐ हृदयादिषु नमः॥ ॥ आवाहना
 दि॥ ॥ ततः पापकृष्णपूजनं॥ॐ सफसमूहस्थानमः॥ॐ अनायास
 कूलनागनाय नमः॥ॐ नदीस्थानमः॥ॐ पापकृष्णाय नमः॥ॐ हृदया
 दिषु नमः॥ ॥ आवाहनादि॥ ॥ ततः वृषपूजनं॥ॐ अग्निनाभे नवाय नमः
 लि१

४॥ॐ नृनृने नवाय नमः॥ॐ चतुर्ने नवाय नमः॥ॐ आधेने नवाय नमः॥ॐ उ
 न्नरुने नवाय नमः॥ॐ कर्नालीने नवाय नमः॥ॐ हीषणेने नवाय नमः॥ॐ
 संहानेने नवाय नमः॥ॐ हृदयादिषु नमः॥ ॥ आवाहनादि॥ ॥ ततः ग
 णपतिपूजनं॥ॐ गणपतये नमः॥ॐ हर्षनाय नमः॥ॐ मूषासनाय नमः॥ॐ
 गणेशाय नमः॥ॐ गजाननाय नमः॥ॐ अष्टिदाय नमः॥ॐ प्रकटनाय न
 मः॥ॐ लम्बादनाय नमः॥ॐ गङ्गासूनाय नमः॥ॐ हनसूनाय नमः॥ॐ हर्ष

वनाश्रयनमः॥ॐ हृदयादिषडंगः॥६॥ आवाहनादि॥ ॥ ततः सगु
णपूजनं॥ॐ अश्वत्थामाद्यष्टचिन्मयी विद्यानमः॥ॐ अश्वत्थामनमः॥ॐ वल
यनमः॥ॐ शाश्वतनमः॥ॐ हनुमत्नमः॥ॐ ठिरीषण्यनमः॥ॐ कृपा
यनमः॥ॐ चर्तुगामायनमः॥ॐ मार्कण्डेयनमः॥ॐ हृदयादिषडंगः॥
आवाहनादि॥ ॥ ततः श्रीमन्मन्त्रपूजा॥ॐ ब्रह्माय नमः॥ॐ महेश्वर्य
नमः॥ॐ श्रीमार्ग्यनमः॥ॐ वेष्मणेनमः॥ॐ वामाक्षेनमः॥ॐ इन्द्राय नमः॥

नमः॥ॐ चामुण्डेयनमः॥ॐ महालक्ष्मणेनमः॥ॐ हृदयादिषडंगः॥७॥
आवाहनादि॥ ॥ ततः एतन्मन्त्रपूजा॥ॐ कपिलादिपंचगमामृतकथा
नमः॥ॐ नन्दाय नमः॥ॐ रुद्राय नमः॥ॐ सूनवे नमः॥ॐ सुनीलाय नमः॥
॥ॐ सुमनस नमः॥ॐ हृदयादिषडंगः॥८॥ आवाहनादि॥ ॥
ततः दूरवापिंश्यापूजा॥ॐ बह्मिनीनाम्नादि विद्यानमः॥ॐ स्कानदवस्थानमः॥
॥ॐ कूलदेवता विद्यानमः॥ॐ सर्वेश्वरदवस्थानमः॥ॐ हृदयादिषडंगः॥

॥ ४ ॥ ॥ नमो जजमका दिना गुद वयात ॥ ॐ यज्ञाय वीर्यमूर्तिरि ४
सु (लो न) विगुदी कर्तुं । प्ररो कर्तुं मया दवी गृहा ए सूत्र विन्दित ॥ ॐ स्वः
स्वाये यत्र मं गृये अष्ट रुत्र यज्ञाय वीर्यमूर्ति नमः ॥ ॥ सकल स्रु जजमका
नय ॥ ॐ यज्ञाय वीर्यमिति ॥ कलस पाय वृक्ष वलि (ग) उजा सगुण
कोमारी (ग) ग्राम अर्थ पाद दृष्टा र्थि स्वा थ कथन ॥ स्नान दवयात ॥ ॐ
माला कुन्दा कुयूथिरि नृथिर्न दवपूजिर्न । मालमी मूर्ति पूषा शे र्द का

माद स्तु यावती ॥ सकल स्रु स्नान क्वाय कलसादिन जजमका क्वाय क
थन ॥ ॥ कपास कड लि कपास पिलि कडुक क्वाय ॥ ॐ विद्या स्र व मुः
निव दू निदुय विविण व मु निव र्णैय गृष्ट । कर्पा स दान व न व मु लार् र्थ रुव
द्रव द विन मान मस्त ॥ ॥ ता स्नान ॥ ॐ अ (ग) क विल प र्णैय र्थ क द म
न तथा । धसु र्म मल्लि का र्थैव हृष्य क न वीर्य क ॥ गृष्ट ता द व द व ग पुषा
म ता नि अष्ट क ॥ ॐ स्वस्वा नो द वी अष्ट पुष्य नमः ॥ ॥ माल स्नान ॥ ॐ काला

विमं यथापूर्यं यश्च वरुणः ॥ सुगन्धिरिषा विचित्रं गुं स्त्रितामालां गृहाद्य पर
मन्थनी ॥ ॐ स्वस्मान्नो दधौ मालापूर्व्यं नमः ॥ ॥ चलं स्नानं ॥ ॐ यद्यं मनः
सिर्जं जातं लक्ष्मी वास गृहा रुनी गृह्णतां गुजगन्ता ता महायद्यं प्रसीदमं ॥
ॐ स्वस्मान्नो दधौ यद्यपूर्यं नमः ॥ ॥ उच्छास्नानं ॥ ॐ नीलात्यलं यत्र निर्व्यं
पविर्गं निववन्न रं ॥ सुभदवी मरुगानि गृह्णतां उत्पलं तव ॥ ॐ स्वस्मान्नो द
धौ उत्पलपूर्व्यं नमः ॥ ॥ दमनं ॥ ॐ कंदर्पं रुस्म संजातं पविर्गं दमनीं गु

रं ॥ गृह्णतां च मरुगानि आनागं सर्वं कामदं ॥ ॐ स्वस्मान्नो दधौ दमनपूर्व्यं
नमः ॥ ॥ जाती पूष्य ॥ ॐ महावीरु वतां या वि पूष्य जाति समन्वितं
नानागैश्च सूर्यं धा र्जं जाती पूष्यं नमः ॥ ॐ स्वस्मान्नो दधौ जाती पूष्यं नमः ॥
॥ ॥ दिव्या अरुत दारुल स्नानं ॥ ॐ दूर्वा कृतानि पूष्यानि सर्वं किलिषना
ननी ॥ धर्मं संतान धान्यादि गृह्णतां यत्र मन्थनी ॥ ॐ स्वस्मान्नो दधौ अरु
रुत दूर्वा कृत पूष्यं नमः ॥ ॥ उल्लगी ॥ ॐ या रु लिनि ॥ ॐ स्वस्मान्नो द

श्रीगुरुजीनमः॥ ॥ रुल॥ ॐ रुलं च विविधाकारं कदनीयनसादिकं
। ॐ दूयुजादिसमं गृहाद्यनमं गृवि॥ ॐ स्वस्मान्मोदयोरुलंनमः॥ ॥
ग्लल॥ ग्वय॥ ॐ सर्वमोरायसंपलिनाय संपत्तिर्यस्य वत्॥ गगल्लक
विनामर्थतामूलप्रतिगृह्णतां॥ ॐ स्वस्मान्मोदयोरुलंनमः॥
॥ ॥ नेवद्यधलिया॥ ॐ नेवद्यं गिरिजयूगं मे यद्विनामर्तनिव। घृण
गर्कनसायूकं यदलमिदमीधुना॥ ॐ स्वस्मान्मोदयोरुलंनमः॥ ॥

पक्वान्॥ ॐ सरवयवचू। ॐ न घृणयुयाचिर्न तथा। सर्कना सहिते ४ पूर्ण प
क्वान्प्रतिगृह्णतां॥ ॐ स्वस्मान्मोदयोरुलंनमः॥ ॥ धूप॥ ॐ वनस्यमि
त्रसायनं नानागले मुसंयुगं। आद्यात्सर्वदवानां धूपार्थप्रतिगृह्ण
तां॥ ॐ स्वस्मान्मोदयोरुलंनमः॥ ॥ दियादीप॥ ॐ सुप्रकाशमदानदीप
४ सर्वप्रतिमिपद॥ सवाक्याय नमः क्षान्तिर्दीपार्थप्रतिगृह्णतां॥ ॐ स्वस्मा
न्मोदयोरुलंनमः॥ ॥ धनमोदुनिरुप॥ ॥ गत॥ ४ स्वानग

नमः॥ उं कृत्तयूगयनमः॥ उं कुत्तयूगयनमः॥ उं द्वायनयूगयनमः॥ उं कलि
यूगयनमः॥ उं रूद्रायनमः॥ उं अयनमः॥ उं यमायनमः॥ उं नैमृणाय
नमः॥ उं वनूयनमः॥ उं वायव्यनमः॥ उं कृत्तयनमः॥ उं ह्रीं नमः॥
॥ उं अयनमः॥ उं दुर्गायनमः॥ उं अयनमः॥ उं वनूयनमः॥ उं वासा
यनमः॥ उं हनुमन्मः॥ उं विहीयनमः॥ उं कृत्तयनमः॥ उं यन
नामायनमः॥ उं मार्कण्डेययनमः॥ उं आदित्यायनमः॥ उं सामायनमः॥ उं मंगलाय

उं वृक्षायनमः॥ उं वृक्षयनमः॥ उं लुकायनमः॥ उं नैमृणायनमः॥
उं नादयनमः॥ उं कृत्तयनमः॥ उं अयनमः॥ उं हनुमन्मः॥ उं कृत्तयनमः॥
येनमः॥ उं नादयनमः॥ उं मृगयनमः॥ उं आदित्यायनमः॥ उं पुनर्वसु
नमः॥ उं पुष्यायनमः॥ उं अयनमः॥ उं मद्ययनमः॥ उं पूर्व
नमः॥ उं उरुगुह्ययनमः॥ उं रुद्रायनमः॥ उं विहायनमः॥ उं स्वायनमः॥
॥ उं विहायनमः॥ उं अयनमः॥ उं अयनमः॥ उं मूलायनमः॥ उं

नमः॥ ॐ शुभिवाताय नमः॥ ॐ वलिया नाय नमः॥ ॐ यत्रिद्याय नमः॥ ॐ नि
वाय नमः॥ ॐ सिद्धय नमः॥ ॐ साध्याय नमः॥ ॐ शुक्राय नमः॥ ॐ शुक्राय नमः
॥ ॐ बुद्ध्याय नमः॥ ॐ बुद्ध्याय नमः॥ ॐ वेधुनाय नमः॥ ॥ ॐ मध्याय नमः॥
ॐ वृषाय नमः॥ ॐ मिथुनाय नमः॥ ॐ कर्कटाय नमः॥ ॐ सिंहाय नमः॥ ॐ
कन्याय नमः॥ ॐ तुलाय नमः॥ ॐ विष्णवे नमः॥ ॐ धनूषाय नमः॥ ॐ मकराय
नमः॥ ॐ कूम्हाय नमः॥ ॐ मीनाय नमः॥ ॥ ॐ पुनियदाय नमः॥ ॐ दि

नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥
ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥
ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥
ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥
ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥
ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥
ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥
ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥
ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥
ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥ॐ न नीयायेनमः॥

मर्त्यं गृहाण स्वाहा॥ लूय॥ॐ अर्धायं दवद नि पूर्य र्थं मम गात्रं॥ गृहाण
र्धं मया दत्तं प्रसीद यत्र मं श्रुति॥ गीतं पूजा॥ॐ त्वेयं न सागताय न विष्णुः
ना विधिं न पूजा॥ अमृतं सर्वं दवद यं च जन्म न मा मुत॥ नमस्तुते॥
धनं वा खं ज्ञाय॥॥ प्रणिष्ठा नायन॥ॐ मना हूति॥॥ जाय॥ॐ ह्रीं
कीं गुं भं ज्ञाय॥१०॥ मधुल दयक॥ स्मरणं॥ द्यौं भय॥ॐ नमः स्वस्मानय
त्र मं श्रुता र्था॥ॐ नमस्तु र्थं निवारय नि उमाद येन मानमः॥ नमस्तु दव

दवाय. कात्यायनो नमानम॥१॥ शुभ कायनममुख्यं. दुर्गोदयो नभा
नम॥ नमस्तु सदा वरेव. रुद्रादयो नमानम॥२॥ नमस्तु हमायनि.
जुष्टिजाये नमानम॥ गङ्गा नायनममुख्यं. काल नाशो नमानम॥३॥ नम
स्तु गरुवायनि. महागोशो नमानम॥ गीरुवायनममुख्यं. कामेश्वरो नमान
म॥४॥ चिंगलायनममुख्यं. हृगनाथो नमानम॥ त्रुदायनममुख्यं. आ
र्यादयो नमानम॥५॥ श्रीगाना यनममुख्यं. प्रहारेय नमानम॥६॥ अयव

नमस्तु रुवानोच नमानम॥७॥ नमस्तु चतु मूर्धुच. पार्वतीच नमानम॥
सर्वपापविनिमूकः निवलाक मदीयन॥८॥ वन्द्यदर्व पूनादी सुत्रममन
गुर्नृत्तगनस्तु नमस्तु. निर्यन्तर्क सुस्तु. प्रिगुवननमिर्न सर्व सत्त्वैकना
थं॥ निःसंर्ग निर्विकारं वजननमनदक गदाये विमूक. या गस्तु सैकमा
र्थं प्रिगुववित्रदिर्गं यपशं स्वतूर्य॥९॥ ॥ कल गया॥ उन्नतो यधी स
कलगीर्थकलनपूर्व. स्वकृण यल्ल वस्तु. गिरिग पूषामाली. यल्ल पूषा ग्ये

विषयं मुनिरिह्युगलं तं कुरुमूर्तिनिवगकि यूर्तनमामि ॥ ॥ पापकृष्टः
 या ॥ ॐ नमस्तु धर्मकृष्टाय पापिनीयतनाय वा पापिनीमाकनाथस्य पा
 पकृष्टाय नमः ॥ ॥ वलिता ॥ ॐ निखानन्द करैर्गन्धर्भी निःकलं कीनिना
 मयी ॥ श्रीमातीतपनं गूनी ॥ ऐत्रवीतनमाम्यहं ॥ ॥ २५७७ ॥ ॐ विष्णुं वराय
 वीनाय विष्णुं वराय नमः ॥ सर्वविघ्नहर्त्राय सर्वभूतार्थनमः ॥ ॥
 हस्तुतया ॥ ॐ शुभं कामावलितासा हनुमांश्च विहीमव ॥ कृष्णपत्रगुणमाय

ॐ

मार्क (७) यायन नमः ॥ ॥ कोमानीया ॥ ॐ कोमानी मयूना नूटा नकीगीनक
 वाससी ॥ गच्छक विन्दुमूजाव गुच्छव निनिभास्तुम ॥ ॥ २५७७ ॥ ॐ नमः
 कृष्णकविलं द विनमस्तु नयूजिन ॥ यविर्ग सर्वदा धर्मीयूजिनं च नमाम्यहं ॥ ॥
 ॐ पापाहं पापकृष्णहं पापात्मा पापसैरुवक्ष्यादि मां यूपुत्रीकादु सर्वः
 पापहन्तारुव ॥ ॐ शुभं गणवर्दीनासि स्वमेव गणवर्दीमम ॥ नमो कावर्दी
 रावर्दी नक्षत्राय नमः ॥ ॐ ॐ हृदय नमस्तु खं कूलदवनमानमः ॥ ॥

नदवग्रहाः सर्वे पूजां गृह्णन्तमासुत ॥ ॐ यथावादीयहानादीं कवर्तुं
वशुमानदीं । मधुदेवविद्यानां । एतानि कुरुवशुमानदीं ॥ यजमानादीं स्वस्त्व
नीवतविद्यानां । मधुदेवविद्यानां । एतानि कुरुवशुमानदीं ॥ यजमानादीं स्वस्त्व
मधु ॥ मधुलससाहसाननकचक्र ॥ मधुलससनक, लाहानसिध ॥ दवद
दिध ॥ वाङ्मदीयुत ॥ वाङ्मदीयान, ददिध, निधविद्या ॥ न्यासामुदादवादि
विसर्जनी ॥ ॐ उदयनमस ॥ सूर्यसाक्षिधाय ॥ यजमानादीं स्वस्त्वानीवत

सष्टैर्गुणैर्धकुलकर्मदाः साष्टिः। दीप्तिस्तुत्यायाधनमः॥ ॥ अरिषककलः
 ॥ अदकन, दय्यदी नामुपाशुनिक्षयः॥ अरिषकः॥ उं दवस्यत्वा॥ चन्दनः॥ उं यद
 यकः॥ सिन्दूरः॥ उं हंजविष्टदाः॥ सगुदाः॥ उं दधिकायाः॥ उं दीर्घायुस्त्वा॥ अग्नी
 वीदवियाः॥ उं धूनस्त्वा॥ उं नूदं रुविः॥ ॥ अर्यसंज्ञायवनिषनिः॥ अगद
 माउज्ञाय, दवधियकाव, विषः॥ घानदीयायः॥ नूतिस्वस्मानीवतविधिः समा
 पः॥ ॥ गुरीः॥ ॥ अथिनज्ञायमान, सगुदाविष, एनमायात, न्वय, न्वे

काकिरु ल अरुपूयक सहिगंगस्य लव कायकृता ॥ संतिनकायमयव मिसाया
नतय

ग द्रुथ पुथ वियमानकृता ॥ ॥

सग्ये

माहनी
रुय

म
म



ॐ ह्रीं श्रीं स्वस्ति नमः ॥
अमलवक्रजा हृदयसुगयविह
ललावासयेकनपाठावस्थवक्रजा
मं देवपुमिमात्या खन ॥



००००००

००००००

१ धी ग (६) ना य ॥ अथ मृषियेश्वरी वृत्त विधानं लिख्यते ॥ त्रिप्राचम्या ॥ अंग
नतय स्नानन कृय ॥ अंग स्नान जा कर्ल स्वजा ना धान ॥ उं अयादि ॥ वा क
॥ यजमाना नाम विर्यं च मी वृत्त कर्म कर्तुं श्री सूर्या या र्घो नमः ॥ कर्तन ॥ उं
था जनानां सरु अं हं हं गतं हं च या च जनं ॥ अंग न निमिषा र्घं न कुममाननः
मा मुत्त ॥ रासु नाय वृष्यं नमः ॥ धूप नमः ॥ ॥ गारा च पूजा रुद्रि धि स्थीत
॥ उं सफ र्षि स्थानमः ॥ उं सफ र्षि य ॥ गुरु ॥ अं हं सर्व वी च गुरु ॥ दा ॥ सर्व पायश
अनु स्नान गा स्नान गा वि वा ॥ उं सिद्धि न मुक्ति या न कृ वृद्धि न मुध ना यूध ॥ पूष्टि

प्रमुग्धग्रीवश्च भक्तिमयुगुहगव ॥ सर्वविघ्नयणमर्न सर्वभक्तिकर्तृगुहं ।
 आयुःपूर्णवकोर्मय लक्ष्मीर्द्विदिवर्द्धन ॥ यथावा एषोक्तोनाम कवचं रुच
 दुवात्रदी । तद्देवविद्यागानां भक्तिर्देवदुवात्रदी ॥ यजमानोनामृषिययमी
 वतनिमित्तार्थकमपुसूयराजनं नमस्कृतमि ॥ ॥ वाक्कलस्क कल्यान
 तन । कमपुसूयराजनं समर्पयामि ॥ वाक्कलान सुयार्थं द्रवयावाक्क
 नी ॥ ॥ पुनूनमस्कात्र ॥ ॐ अस्वपुमपुलाकात्रमि ॥ न्यासार्थपाण्डूजा ॥ ॐ १०
 ॥ ॐ नी (गवयमूनं देव (गवतावनीसत्रस्यती नम्रदसिन्धूकावत्रिजलस्मिन्

सन्निधीरुच ॥ धर्मेस्वनवृत्तिनिगदाय ॥ ॐ इह न निश्वसंजाना रम्याय
 वृत्तिवासिनी वाक्कलसमनूक्ता गच्छदवीयथसुखं ॥ ॥ ततोदोमर्द्धन
 ॥ ॐ गत्यायामिति सर्वय (० न ॥ ॥ अदित्यादिनवग्रहाञ्जन ॥ ॐ अरुधू ॥
 ॐ न्यादिदललाकयालाञ्जनी ॥ ॐ शानात्रमित्यु ॥ यंचलाकयालाञ्जनी ॥ ॐ गदी
 नात्वा ॥ यंचवकु सदानिवाञ्जनी ॥ ॐ सशाजाना ॥ ॥ मृषियावद ॥ ॐ वाक्क
 लसः यिगजः सामागनिवः (गद्यावायुधिवीभूनरुसायूवानरुः पाण्डुद्विगाव
 (धनरुमाह (धनूयसः ॐ सी सदः ॥ ॐ वयूगस्य न लमस्यजन्माहूकस्यवाधि

जनयं च जिह्वा । विष्णुं यद्गुदं च जर्मं तु दवा वृहद (क्षेम विधमूचीना ॥ उं यद्यक
 म्मा ॥ उं यत्तु पवित्रं विष्णुं (गुविनगर्मना विष्णुमननूना पुमा ॥ उं वृद्धयक्ता
 नी ॥ उं अयं स हस्तमृषि रिः सहस्रसूक्तं समुद्रं वपय (था सत्यमा अयमदिमा
 गृहं सर्वं यत्तु यद्विषनाज ॥ उं सकृन्मृषयः प्रमिहि नागरी नं सकृन्मृषयः प्रमिहि नागरी नं
 यमादौ । सका य सकला कमीयुस्तु जाग्रमा अयं प्रजापति सदी च दवी ॥ ॥
 नमः कलनपूजा ॥ उं आ जिह्व कलनी ॥ ॥ सनपूजा ॥ उं नमा सुसर्था ॥ ॥ स
 पुनपूजा ॥ उं वा द्वाधमस ॥ ॥ ग (क्षेमपूजा ॥ उं ग क्षेमात्मा ॥ ॥ वलिपूजा ॥ उं न

मावस्तु नाय ॥ ॥ लम्पसपूजा ॥ उं आर्य (गोः पृष्णि ॥ ॥ कोमात्रीपूजा ॥ उं हि
 नव्यं वत्सु हविषी ॥ ॥ दूरवार्धिस्वापूजा ॥ उं आर्य (गोः पृष्णि ॥ ॥ उं वृद्धयक्ता ॥ उं न
 मः कलनपूजा ॥ उं ग क्षेमात्मा ॥ उं नमावस्तु नाय ॥ उं ती वान ॥ उं नमा सुसर्था
 र्या ॥ उं वृहस्पति ॥ उं नमः गीगवत् ॥ उं जागवत् ॥ उं प्रीत्यमे ॥ उं विष्णुतचदू
 ॥ ॥ द्वाधमस ॥ उं समित ॥ ॥ सिद्धनमूद ॥ उं प्रीत्यमे ॥ ॥ मासादियक्ता
 दिपूजा ॥ उं अर्द्धमासा यत्तु ॥ उं सक्तिन ॥ उं पयः पृथिवी ॥ उं विष्णुत
 नाट ॥ उं अग्निदेवता ॥ उं श्रीः गम्भीर ॥ उं शुभेक ॥ ॥ धूय ॥ उं धूनसि ॥ ॥

दीप॥ उं भजामि॥ ॥ नेत्रं द्या॥ उं अन्नपतन॥ ॥ प्रतिष्ठा॥ उं म॥ नो ईनि
॥ तायक्ष्म॥ ॥ तिथिदा पुन॥ ॥ अथ वृत्तसंकल्पं कात्रयं ॥ उं नो द्वा॥
पृथीत्वा॥ उं अथ (पुनर्वसु) ॥ अथादि॥ राहुपक्षे पुनर्वसु मारुति (ओ) स्नामा
स्नानत्रया दद्यात्तु पूर्वक सर्वपाप क्षय कामनादि दिव्य विमानादियत्रा
हनस्यर्गसंपादिकाम नार्थं मुषियं च मीवृत्तमर्हं कत्रिधा ॥ ॥ तगा ध्यानं ॥ कस्या
नो मारुति यो॥ उं सफर्षय ॥ पुनः ॥ अथा सर्वपाप वलपदा ॥ सर्वपाप वधा हनु
नगा स्नान ॥ ॥ कथं ध्यायेत्तदा ॥ विष्णुमिशो थ (मो) तम ॥ यमदग्निवर्ति

वृत्तसाधोयेषा यानुधती ॥ नमावद्वा द्याववायव क्रमं उ सप्त रुमी सूर्य कादि
यती कोनी मुषिवृन्द विचिन्तयं ॥ ध्यानपुष्पिनमः ॥ अर्थं यवर्ग ध्यानं ॥
आवाहनी ॥ उं आग कुरु मकाराणि ॥ अथ पुनर्वसु दे सप्त विती या वृत्तमर्हं कुरु
यथा रवतः स्मिता ॥ ॥ आसेम तया ॥ उं अथ ॥ ॥ साम वं दानं सप्त यथानमा
नमः ॥ पूजाद्यपुनः सादि दवर्षि स्थानमानमः ॥ ॥ या द्या ॥ उं गन्धपुष्पाक
नाथं नो योर्धं गृह्णतु सा दिजा ॥ असादं कुरु गन्धपुष्पा सु सप्त सप्त सदा मम ॥
अर्घ्यं ॥ उं नरु सप्तु कुरु यथार्था अर्जिता मुषिसक्तमा ॥ दग्धा पापं तु भसर्व

ASHA ARCHIVES

3413

२१७ स्व. वृ. वि. - अष्टमि पं. वृत्त विधि
मैत्रोपपन्न मं गले व्योम च

सिद्धि ३३

२१७ स्व. वृ. वि. - अष्टमि पं. वृत्त विधि
मैत्रीवत्त मे गले वधे व

卷之四

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गृहीतवर्धनमानमः॥ ॥ आचमन ॥ ॐ लाकानां सुष्टिकर्त्ता यूर्य सर्वगयाधना॥
 नमो वृह निधनया मरु विद्याममानमः॥ ॥ स्नान ॥ ॐ मन्दाकिनी ज्योतिर्मी
 य यमूनाय सनसती । तस्या जलं समानीय स्नानार्थं प्रतिगृह्णामी ॥ ॐ गङ्गा सनस
 ती प्रदा यथा मी नर्मदा जलं । स्नायितां प्रमया देवाः ॥ नमि कूर्वन्तु मं दिजा ॥ ॥
 वसु यज्ञाय वीत ॥ ॐ सर्वं निर्लेपं तथा निष्कृष्टं कृष्णं वादिनः ॥ वसु विप्र निः
 गृह्णन्तु मुक्तिं दास्यन्तु मं सदा ॥ ॥ गन्ध चन्दन ॥ ॐ कृष्णमायुः कृष्णनी सूर्ग धामि ॥
 लिङ्गं गृहीतं गन्धार्घ्यं चन्दनं दिव्यं गृह्णीतु मयि सरुमा ॥ ॥ दिया मूकत ॥
 रत्नं चैव नदत्ता श्री सु निपुङ्गव ॥ अहं वती प्रीतये च भंगारोपकृतं तज ॥

मन्त्रोपनिषत् ॥ मन्त्रोपनिषत् ॥

ॐ त्रींतिगा कसुमोद्योय साकगायुसु (भरना) गृहीतु मम सनुदा ॥ प्रसन्नाम
 विसरुमा ॥ ॥ पूषा ॥ ॐ मालगी र्वपका दीनि सूर्ग धीनि दिजा रुमा ॥ म
 याह गानि पूषा वि पूजार्थं प्रतिगृह्णामी ॥ ॥ गार्हपत्य ॥ गार्जुनी काथन ॥ ॥
 कलन पूजा ॥ ॐ र्वपूर्व कलन य नमः ॥ ॐ गं गमये नमः ॥ ॐ यमूनाये नमः ॥
 ॐ रमादा वये नमः ॥ ॐ सनसती नमः ॥ ॐ नर्मदा ये नमः ॥ ॐ सिन्धु व नमः ॥ ॐ
 कावये नमः ॥ आवाहना दिव्य चन्दना कन पूषा नमः ॥ ॥ मायुज कुमका ॥ ॐ
 यज्ञाय वीत ॥ मायु स्नान ॥ ॐ मालायादि सूर्ग धामि मालाया विविधानि च ध
 र्वरं मृगनाभयोः ॥ आपाद मरु कलेप अत्र लेपन लेपने ॥

गोत्रं ॥ सप्तमं ॥

आकृता निवृत्तार्थं मालायुष्यं प्रमिगृहीतं ॥ ॐ हृदयादिषु र्गदा ॥ १ ॥
सुगुणयुक्ता ॥ ॐ अग्निं कृष्णं नमः ॥ ॐ वलं यनमः ॥ ॐ व्यासाय नमः ॥ ॐ हनु
मते नमः ॥ ॐ विहीषणाय नमः ॥ ॐ कृपाय नमः ॥ ॐ यत्र गुणमाय नमः
॥ ॐ मार्कण्डेयाय नमः ॥ गोयुक्तां का स्थान ॥ ॥ ततः सप्तयुक्ता ॥ ॐ अत्र
नाथ सुकूलनागत्रां स्थानमः ॥ ॐ क्षात्रसमूदाय नमः ॥ ॐ क्षीत्रसमू
दाय नमः ॥ ॐ दक्षिसमूदाय नमः ॥ ॐ घृणसमूदाय नमः ॥ ॐ सूत्रासमूदा
य नमः ॥ ॐ ॐ हस्तसमूदाय नमः ॥ ॐ कृणसमूदाय नमः ॥ ॐ सत्रां स्थानमः ॥
ॐ देहि मे वां दितं फलं ॥ सप्तदशोत्तमा पुष्पं गृह्णाता मुनि सत्तम ॥

५ हस्तगृह्णाता ॥ पञ्चमं ॥ सप्तमं ॥

ॐ सिन्धवनमः ॥ ॐ सागनाय नमः ॥ ॐ महादधयं नमः ॥ आवाहनाः
दि ॥ वादूज्जं का स्थान ॥ ॥ वलिपूजनी ॥ ॐ असिर्नागदिरेव वः
स्थानमः ॥ ॐ स्वस्मान् कृष्णालाय नमः ॥ ॐ युवागमाहं धृष्टं नमः ॥ ॐ
मन्त्रसिंहोय नमः ॥ ॐ नयालं वकुलादेवो नमः ॥ ॐ लंकार्याना दसीदवी
ममः ॥ आवाहनादि ॥ हादूज्जं का स्थान ॥ ॥ गणेशाय नमः ॥ ॐ गण
यगधं नमः ॥ ॐ मूषासनाय ॥ ॐ गणेशाय ॥ गजाननाय ॥ मृद्धिदाय ॥
सिद्धिदाय ॥ एकदनाय ॥ विष्णुनाय ॥ रुद्रनाय ॥ लंकादनाय ॥ गणेश
व प्रियं मन्त्रं लक्ष्मीं वा स गृहं भुम्भं ॥ गृह्यतां कमलं पुष्पं सप्तर्षिभ्यो नमः ॥

मोहिनी पूजा ॥ सर्व

मः कर्त॥ न्यूनानि निक्कानियत्रि सुटानि यानी हकम्पी विप्रया कृताः
नि। कृम्यानि येनानि युनः कसस्वः यथा हि यस्मिन् न गमाय ॥ ॐ
मन्त्रे वा र्वयः गमा. सर्वपाप पु क्षणनः अस्माकं नुरु लन्दयं रुलेका
लाहवे दुवि ॥ धर्मय नश्च सर्वत्र यूनानि यि युधिष्ठिर। य० नानि नृणां
वापि सर्वपाप पु क्षणनः ॥ यः ॐ दं य० न निर्युक्ति मुक्तिं समर्पेत्
। सर्वपाप विगुडास्मा विष्णु लाकं स ग कृ नि ॥ कलंगया ॥ ॐ न लोषधी
॥ सनया ॥ ॐ न गयो म ॥ ॐ सुगु लया ॥ अथ स्तुता ॥ ग। लंगया ॥ ॐ
रोपे नमः विष्णु मोहि रोपे नमः नं भये २ स्तं भये २ आकरोपे २ मोहि

विष्णु

विष्णु स्तुति ॥ नो जरा त्रं

विष्णु स्तुति ॥ वलिया ॥ ॐ त्रिणा नन्द पदं ॥ रगमसया ॥ ॐ नमस्तु क
चिन् ॥ कोमानी या ॥ ॐ कोमानी मयु गान्तरा ॥ ॐ ददनमानमा सु र्य कूल
ददनमानमः ॥ स्नानदं व ग्रहा सर्वे पूजा गृहीयसीदह ॥ यथा वा लय हा
गर्भा कव र्य रुव पु वात्र ली ॥ ननु दद विद्या ना नी गमिर्द्व वदु वात्र ली ॥
यजमाना नी मृषियं श्रीमी वग पूजा सपूर्व वि। धो नत्सर्व विधि यत्रिपूर्व
यु ॥ ॥ मधुल विसर्जनी ॥ हस्तु चक्षु नली ॥ ददद कि क्षदान ॥ ॥
वाक्म लपूजा ॥ अन्तर्क ल्या न्नी ॥ वाक्म लया त निग्रव विय ॥ न्यासनि
थादत्तानी हा रा त्रं तथे वच ॥ मुनय प्रीतिका म श्री नी जारा त्रं न मो नमः ॥

विष्णु स्तुति

काय ॥ सूर्य साद्विधाय ॥ यजु मा नी नां मृषियं च मीव न संपूर्णं च रु
न कर्म साद्वि (दी प्री सूर्या यार्ध नमः ॥ ॥ कल ग्म दि वि से र्जु न ॥
उं उदयं गमस्व ॥ ॥ गामे पाणं दय्यं निधाय ॥ ॥ कल ग्म द क ना
लिखं कं ॥ उं द व स्यात्वा ॥ च न न ॥ उं य द श क ॥ सि न्द्र न ॥ उं त्वं उ वि स्रु ना ॥
आ गी वी द ॥ प्री प्रु न ॥ उं पू न स्त्रा दि स्या ॥ सर्वं आ गी वी द ॥ गुरुं सर्वं वा न्ध
॥ ॥ ॐ नि मृषियं च मीव न विधनं संपूर्णं ॥ ॥ नी वा न्ध चि पि ना
न पा नं यमी नां ॥ ॥ श्री स क र्षि श्री मि त्र मु ॥ ॥ गुरु न्द हि ३ ॥

१ उं नमः श्री वक्रा ॥ ॥ अथ वे ग र्व कृष्ण चतु र्दशं सा वि नी व न विधि
लिखानं ॥ शुक्रा दि मा स न याल म नं ॥ ॥ राज मा ल ॥ ॥ अ सा सि ग
चतु र्दशं सा वि नी व न मूल मं ॥ अ वे ध या य कूर्च नि मि य ४ प्र द्वा स म नि ५
मा ॥ य ना न व ॥ ॥ अ सा सि ग चतु र्दशं उ प वा स य ना स ती । स न्ध ॥
याम र्जु य द वीं सा वि नी व द मा त रं ॥ स र्प व न्ध सा वि नी व र मूलं ॥
न ध य मं । न न मं त रं कृत्वा व र्णा दि च चतु र्दशं अ वे ध या म वा प्रा ति ।

पूजायु चित्रजीविनः॥ दिवा रा (गण) या द धीं यदा चतुर्दशी रवः॥ गणः
 पूजा महासाधी, दवी सत्यवमा सह ॥ उदय दिने नु सन्ध्यायां चतुर्दशी रा
 हवा यत्र दिने चतुर्दशी माने त्यामा वा ध्यायी समाप्य ॥ यथा कर्म य
 ना (६) ॥ हनवृद्धा त्यामा वा ध्या, न कर्त्तव्या कदाचन वक्तुं यित्वा तु सावित्री च
 ननु निशि वाहन ॥ ॥ लिङ्ग पूजा (६) ॥ निवाद्या माच सावित्री तथा यत्
 चतुर्दशी कुरु यत्केव कर्त्तव्यं कृत्वा महिषा नदीं याने दामपि रुत्तमं

वकार्य ॥ ॥ रविधातुन ॥ ये च द धीं यथा कर्म वट मूल महासगि
 चित्राया विमानानी विधान नय पूजयन्त ॥ अगस्त्याय या द धीं न कं
 कुर्यात्किं न हि या अया चिन्त चतुर्दशी अमा वा ध्या मूपा यत् ॥ ६० ति
 वचनात् ॥ ॥ गण वं न मय वा न वक्तु यत् न व क्षिन्त सावित्री यति मा
 कृत्वा सती वयव (६) रनां सो वरु नाज ना वापि यथा न कि विनिर्मिता ॥ ॥
 पूजयित्वा विधान न परान विमल गुरु यति मा वा द्वा (६) दत्वा प्रिय ह

समापयन् ॥ ॥ नर्वदत्तादिज्ज्जाय, सावित्रीनां यूपिष्ठिन, अवेधयम
 वाप्राणि, सावित्रीकुल्यसंगति ॥ ॥ न तावत्कुर्यात् ॥ चतुर्दश ॥ वाक्कीमू
 कर्त्तव्यं यत्नानादिनिष्कर्मकृत्वा ॥ तटमूलं लेभमथ नायलियपाद्यु
 रव उदयु शवाग उय विध्य, सन्ध्यायां हस्ति वा यं, संकल्पं कुर्यात् ॥ ॐ अशादि ॥
 अमूक (गोपी) अमूक दद्या वेधय कामाग्नी स एव त्सा विणी यमपूजां सा
 विष्णु पाख्यान प्रवक्ष्यामि कचतुर्दश वर्ष समाप्य सावित्री चतुर्दशी वि

तमर्हक निष्ठा ॥ ॐ मिर्से कल्पं ॥ तटमूलं मधुलं कानय ॥ तस्याप
 त्रिती (धर्म) दक पूर्वोद्यटं स्काया गद्य निर्वसमय पाण, तस्मिन्सूत्र
 र्णमय सावित्री वक्रा मूर्ति स्काया पीतवस्त्रयुग्म नव द्धितं, तस्मिन्
 पूजयन् ॥ द्यटा (य) अर्घ्यपाण, द्यटदक्षि (ध), गु (ध) र्ण ॥ द्यटवामयमं ॥ ओ
 दोदवत्सा, यश्च मृतादि स्नानं, जलस्नानं, चन्दनं, पुष्पादुषर्णं ॥ धूपं च दत्वा ॥
 आदौ सूर्यार्घ्यं ॥ ॐ अशादि ॥ अमूक (गोपी) अमूक दद्या अवेधय कामाग्नी

रसिन्धु नयवा कृतयज्ञाय नमः

धूपदीपनेत्रयादि, न तावत्कुर्यात्
 न च मन्त्र २

सावित्रीवक्रासप्तवत्सावित्री नमः पूजा सावित्रीयाख्यानप्रवक्ष्यामि कसा
 विमिश्रदुर्दलीवमार्जनकर्तुं ग्राह्यादीनमः ॥ ॐ अक्षय ॥ यथा राज
 ने ॥ सिद्धिस्तु क्रिया नमः ॥ ॥ अथ गणेशपूजनं ॥ न्यासः ॥ ॐ गं अक्षय
 म्नाय रुट् ॥ ३ ॥ ॐ गं हृदयो य नमः ॥ ॐ गं निमग्नस्तदा ॥ ॐ गं निश्वासे धी
 मट् ॥ ॐ गं कवचाय हूँ ॥ ॐ गं नमः ॥ यथायथो षट् ॥ ॐ गं अक्षय रुट् ॥ ॥
 अथ सनपूजा ॥ ॐ अक्षयनादि स्था नमः ॥ ॐ यद्वा सनाय नमः ॥ ॐ मूर्खा सना

यनमः ॥ ध्यानं ॥ ॐ सिन्दूरार्चं चिन्मयं पृथुज ० नंदरूपं चोर्द्धधनं दनं पा
 नाक्षरं लक्षणं नूतनकलविलसद्दीपयुजा हि नाम ॥ बालं नूतनाभिं मोलिकनि
 ३० यतिवदनं दानं पूजं गुरुं लंगीत्यावद्धं रत्नं रजतं गणपतिं नमस्कृत्य ना
 ने ॥ ॐ आप्तुं विधिः ॥ ॐ गं गणेशाय नमः ॥ ॐ गं गणेशाय नमः ॥ ॐ गं गणेशाय नमः
 मः ॥ यथा ॥ ३ ॥ नमः नमः पादं अर्घ्यं आचमनं चन्दनं सिन्दूरं उपवी
 तं पूषा दानं धूपं दीपं नेत्राद्यं भादकं ॥ जपं स्मरणं ॥ नमः दनं द्विदं

चत्रमुदनीचत्रुर्जु। अक्षिगूत्त रुसंचत्रकनर्गवल्लयर्द॥ अग्रगं
धदि॥ ॥ वनिरि॥ एकयूष्यासर्न॥ एकयूष्यागिरसिरुषली॥ एक
यूष्याद्यार्द्विधन॥ नन४ सावित्रीयुजा॥ नं४ चन्दन रुसुनं लिपित्वान्या
संक्रियात्॥ ॥ उं स४ अस्माय रुद्र॥ उं स४ अंगुष्ठाया निम४॥ उं स४ गङ्गा नीत्यां ॥
स्वाहा॥ उं स४ मध्यामायां वषट्॥ उं स४ अनामिकायां हूं॥ उं स४ कनिष्ठायां वीं
षट्॥ उं स४ कनकलयायां रुद्र॥ अवददयादि॥ मालययं दिग्वन्धनं ॥ ३

सावित्रीमनसाक्षयः॥ अर्घ्यपात्रयूजा॥ हृदयादिना॥ उं गी (गत्रयमूनं
 चैव, (गमजावनीसप्तस्वनी। नर्मदसिन्धुकावन्नि, जलस्मिन्सन्निधीरुवे ॥
 अर्घ्यपात्रयूजाहृदनादिचन्दनाक्षयूष्यन्नमम॥ (धनूमुद्रा॥ अर्घ्यपात्रादक
 नात्मादि सर्ववस्तुषां सर्वपवित्रीकनदी॥ उं उल न निखनजागा, हृद्या
 यर्वनवासिनी, वाक्काक्ष समनूक्षागा, गच्छदवीयथासुखं ॥ ॥ आत्मनश्चन्द
 नमः॥ आत्मनश्चन्दनमः॥ आत्मधनं ॥ उं मूकाविद्धमहेमनीलधवलकायं

मूर्खे मुक्ति काले, युकामिन्दु निवृत्त नल मूक टां पूरुन्दु काटि युली। सा विगी व
नदां कर्ण रय प नी र्पण कया लंगुली, नी र्वच कु म धा न विन्द युग नै रु सै र्व रु
नी रु अ ॥ ॐ आत्म न ध्या न पू र्ण नमः ॥ ॥ त न ॥ आ स न ॥ ॐ आ ध्या ना दि स्थान
मः ॥ ॐ य ध्या स ना य नमः ॥ ॐ हं सा स ना य नमः ॥ द वी द्य ट आ वा ह य त ॥ ॐ
ह ग व नी द वी रू हा ग का ग क नि षु नि षु स नि ना रु व स नि धा न रु व यु र्म नो रु व
स्वा हा ॥ आ वा ह न मू द्या ॥ ॥ पू न ध्या न ॥ ॐ मू का वि द्म रु म रु म नी ल ध व ल क्वा ये मू

खे मुक्ति काले, युकामिन्दु निवृत्त नल मूक टां पूरुन्दु काटि युली। सा विगी व नदां
कर्ण रय प नी र्पण कया लंगुली, नी र्वच कु म धा न विन्द युग नै रु सै र्व रु की
रु अ ॥ ॐ सा विगी ध्या न पू र्ण नमः ॥ पू र्णा रु लि ग य ॥ ३ ॥ ॐ सा विगी नमः ॥ ॐ
या द्य अ र्घ्य आ र्च म न, स्ना न, च न्द न, सि न्द न, य वा क्त न, य क्षा य वी त, पू र्ण, धू प, दी
प, रु ल, मा मू ल, ने षा द्या दि ॥ ॥ हृ द या दि ॥ ॥ अ र्घ्य द ट स वा म रु (ग य म
पू जा ॥ ॐ श्री य मा य रू द मा स न नमः ॥ पू र्ण नमः ॥ ॐ ॥ आ वा ह न ॥ या द्य अ र्घ्य आ

चमन, स्नान, चन्दन, सिन्दूर, यक्षापवीत, पूषा, धूप, दीप ॥ स्नात ॥ ॐ यमस्तु
विष्टलाकानी, गमस्तु वै कर्मिणां नृणां । रुलदः सर्वरुगानी, यमासिवनधार
व ॥ ॥ नगावटवृक्षपूजा ॥ ॐ वटवृक्षाय नमः ॥ ॐ पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, च
न्दन, सिन्दूर, यवाक्रम, यक्षापवीत, पूषा, धूप, दीप ॥ स्नात ॥ ॐ वटसि वृक्ष
नाथस्तु, स्वागाहनि रुगास्तु कः । खनु लत्य सादन, कुण्ठमं सरुलं विष्ट ॥ ॥
पूनद्यटपूजनं ॥ ॐ वृक्षाय नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ नूदाय नमः ॥ ॐ ऋषिना

यनमः ॥ ॐ सदानिवायनमः ॥ ॐ ऋन्त्यादि दल लाकपालस्थानमः ॥ १० ॥ ॐ आः
दित्यादि नवग्रहस्थानमः ॥ ११ ॥ ॐ अश्वत्थादि स्थानमः ॥ ८ ॥ ॐ गलपत्यादि वक्षु
लाकपालस्थानमः ॥ ७ ॥ ॐ चैत्रादि मास स्थानमः ॥ ६ ॥ ॐ अग्निमान्दुर्ग
स्थानमः ॥ ५ ॥ ॐ विष्णुदिशा रग स्थानमः ॥ २१ ॥ ॐ भयादि द्वादशमासि
स्थानमः ॥ १२ ॥ ॐ पुनिपदादि स्थानमः ॥ ११ ॥ ॐ कालस्थानमः ॥ १० ॥ ॐ प
क्षस्थानमः ॥ ९ ॥ ॐ चैत्रादि स्थानमः ॥ ८ ॥ ॐ वसन्तादि षट्पञ्चस्थान

यादि ॥ ६ ॥ ॥ रुल, नेशुश, पकान्न, तामूल, पुगदि, धूप, दीप ॥
अथार्घ्यं ॥ गीर्वाजल, दग्ध, उन्दन, दुर्वासह, कन्दपूष्य, कृष्णशुभ, रुल,
अतानिष्ठापयित्वा ॥ ॐ अश्वि, श्वेत, ब्रानाह, मि ॥ ॐ अश्विदि ॥ अमूक, गणेश
अमूकद, शर्वेध, कामा, श्रीसर्पवत्सा, विष्णु, यम, पूजा, सावित्री, या रघुनातुः
श्रवणात्मक, चतुर्दशी, वर्ष, समाया, सावित्री, चतुर्दशी, वनग्री, सावित्री, धर्म
सा, अथ सगदीयनिवा, नथ, ॐ दमर्ष, गृहा, ए स्वाहा ॥ ॐ अथ कीर्तनकृष्ण

॥ नमस्तु दधवदधि सा विष्णोर्वदमागर्वाभूवेध्यायकार्यार्थं गृहा
 नार्धं नभामुत ॥ स्मृता ॥ ॥ प्रतिष्ठा ॥ मधुला ॥ वाक्का (प) न गभयणी
 जय ॥ ॥ स्मृता ॥ उवा (प) य स्य च मा दका दविमलंदनं कू ७ ना यूः
 धं चंदारं मदमरुना गवदनं गाला पवीता करं । यदन्दासूत्र किंचन
 म्निग (प) नो रे १ सदा वं दि तं विधुर्गं सतनं ~~नमामि~~ नमामि निरसा
 कामार्थसिद्धिपदं ॥ उवाक्का विष्णुश्च नृदधु चि सं ध्यात्वा मूपासत । वक्

वयामनी श्याद्या सुथदवर्षा यि च ॥ गयी नृपा सिद्धवर्त्तं नज १ सत्त्व
 नभामयी ॥ विष्णुवक्का नृपा नि वदमागर्वाभूवेध्यायकार्यार्थं गृहा
 लाकानी सौक्ता वै कर्मिणी नृपा ॥ रुलद १ सर्वरुता नी यभा सिवमदोरुव
 ॥ ॥ उवा (प) सिवदन्नाथस्तं रवागा रुनिहनात्तक १ रुवकु ल्यसादन
 वृत्तं भस रुलं विरा ॥ ॥ यथा गमुनि ॥ अगु गंधादि ॥ दधवदधि ॥ मः
 लुलवि सऊनं ॥ नग १ सा विष्णु या रवा नं गृह्यात् ॥ ॥ वाक्का वपूजादधि ॥
 कि २

६॥ वाचन ॥ दवाणीर्वाद ॥ यमविसृज्यते ॥ वाक्कलानयमाना रिषः
 कं ॥ चन्दनाणीर्वाद ॥ न्यासद्वयविसृज्यते ॥ सूर्यसाक्षि ॥ वाक्कलानयमाना रिषः
 माघटसहदानं ॥ वाक्कलानयमाना रिषः ॥ वनिलिङ्गकथननिनाहनैवा रुलाः ॥
 हानं ॥ ॥ निवटसाविरीपुत्रसमार्य ॥ ॥ ॥ ॥ गुरुममुकल्यानन्दिहि ॥ ॥
 खडननखकेशानामेधुना ध्यान एव च ॥ त्रानिषसंगरंहिंसा वर्ष
 वृद्धौ विवर्जयेत् ॥ जन्मदिनेन कर्तव्यम् ॥

१ शुद्ध स्फुरतिक संकाशं त्रिनेत्रं ध्यानरूपिणं । पुराणं मयि शिरसा पृच्छ
यार्यती परमेष्ठिनं ॥ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ देवदेव महादेव सर्वज्ञ चंद्रशे
खरः ॥ ब्रह्म मे परमेशानं ब्रह्म तत्रैकोक्यदुर्लभं ॥ ॥ कोऽर्थः सर्वधर्मा
नां भवतः परमो नमोऽस्य ॥ सुरासुरस्तथा नागा भर्ता भार्यास्तसुताः ॥ भ्रा
ता च विविधा जातिस्तथान्ये विविधानराः ॥ अवैधव्यकरं पुण्यं स्वस्था
नस्थितिहेतुकं । न जानंति ब्रह्मदेवतं दुर्गं कथय पुरा ॥ ॥ श्रीभगवा

बुवाच॥साधुसाधुमहादेविःयस्त्वयाहंपुत्रोदितः।समासेनपुव
क्ष्यामिवद्वर्थवतमुत्तमं॥यंनकस्यचिदाख्यातंतेष्टुसाम्बम
हेश्वरिकथयामिनसंदेहंन्य

ॐ श्रीगणेशायनमः॥ ॥ अथसप्तमीव्रतविधिलिख्यते॥ ॐ अम्बा
दिसूर्यार्घ्यं॥ ॐ आकृष्टे॥ पुष्पभाजनं॥ ॐ सिद्धिरक्तं॥ न्यासार्घ्यं
व्यूहात्मयुजातं॥ गंगेचयमुनेचैवेति॥ मूलसंवेगाशोधनं॥ ॐ
योऽस्मान्मातरेति॥ चन्दनयुष्मन्तं॥ ध्यानी॥ ॐ सप्तसप्तिरथारूर
स्यादूरोः स्वस्वसंस्थितं जवाडादिमवन्धूकयद्भगगसमयुभ
एकास्यं यद्भगगादिरक्तार्चिमणिभूषितं रक्तयद्भकराभौ

जं ज्वाला व्यापदि गन्तरं सगणं सासनं सांगं सशक्तिं च समरा
 लं एवं ध्यात्वा तु मूलेन रक्तयुग्मांजलि त्रयं ॥ आत्मने ध्यान युग्म
 नमः ॥ ततो द्वारयूजा ॥ सर्वे ॐ नन्दिने ॥ ॐ महाकालाय ॥ द
 क्षिणे ॥ ॐ भृंगिने ॥ ॐ विनायकाय ॥ यामिने ॥ ॐ वृषाय ॥ ॐ
 स्कन्दाय ॥ उत्तरे ॥ ॐ देव्यै ॥ ॐ चण्डाय ॥ ॐ आधारशक्त्यै ॥
 इत्याद्यष्टयुग्मिकासनं ॥ ॐ सप्ताश्वासनाय नमः ॥ ॐ रथासना

यर॥ ॐ अरुणासनाय नमः॥ आवाहनादिचन्दनाक्षतयुक्तां॥ युन
 ध्यानां॥ पूर्ववत्॥ इहमण्डले न्यागच्छ॥ आवाहनमन्त्र॥ ॐ तिथि न
 क्षत्रयोगैश्च राशिग्रहसमन्विते। सशक्तौ सायुधे सांगे आसने
 त्रैहिभास्कर॥ अथ प्रार्थना॥ ॐ जन्मकोटि सहस्रेणोपाजित
 पायसं च यं। तन्मे रोगश्च शोकश्च हर मे रथ सप्तमी॥ ॥ स्नानं
 सप्तसप्तिरथा रूर सप्तमी रविवासरे द्विसप्तमवता धीशगृ

रास्तान मुत्तम ॥ ततो द्वादशमूर्ति पूजनं ॥ ॐ मा गंशी धर्मिनाय ॥
ॐ यो वे विष्णवे ॥ ॐ मा धेव रुद्राय ॥ ॐ परात्पुण्ये सूर्याय ॥ ॐ
त्रे भानवे ॥ ॐ वैशाखे तपनाय ॥ ॐ ज्येष्ठे भास्कराय ॥ ॐ आषा
ढे रवये ॥ आवर्णे गभस्तिने ॥ ॐ भाद्रपदे यमाय ॥ ॐ आश्वि
ने हिरण्यगर्भाय ॥ ॐ कार्तिके दिवाकराय ॥ ॐ मासाधियत
ये ॥ ततो हृदये शक्ति पूजनं ॥ ॐ कामदायै ॥ ॐ मोक्षदायै ॥

ॐ सिद्धिदायै नमः ॥ ॐ भोगदायै ॥ ॐ तेजोदायै ॥ ॐ भुक्तिदाय
ॐ मंत्रदायै ॥ ॐ धर्मदायै ॥ हृदयादि ॥ ॐ आदित्यादि नवग्रहे
भ्यो ॥ ॐ इन्द्रादि दशलोकपालेभ्यो ॥ ॐ अश्वस्थाद्यष्टविरंजीवि
भ्यो ॥ ॐ अनन्ताद्यष्टकुलनागराजेभ्यो ॥ ॐ सद्योजातादियंच
वक्त्रेभ्यो ॥ ॐ अश्विन्यादि अष्टाविंशति नक्षत्रेभ्यो ॥ ॐ विष्कं
भादि सप्ताविंशति योगेभ्यो ॥ ॐ मेघादि द्वादश राशिभ्यो ॥ ॐ

प्रति यदादि को ड शतिथिभ्यो २॥ ॐ बुद्धगो २॥ ॐ विष्णवे २॥ ॐ सदा शि
वाय २॥ आवाहनादि ॥ ततश्चन्दनं ॥ भवत्प्रियतरं देव रक्तचन्दनक
र्दमं ॥ प्रतीह सर्वदेवेश वश्या कृष्य कलायमे ॥ कुंकुमचन्दनं ॥ इदं
काशीरदेशस्थं कुंकुमं तव सुप्रियं प्रतीह सर्वदेवेश मम सौ भा
ग्यवृद्धये ॥ सिन्दूरं ॥ भवत्किरणवत्तेजः सिन्दूरं प्रियतरं तत् ॥ प्रतीह
सर्वलोकेषु प्रभुत्वकलसिद्धये ॥ यज्ञोपवीतं ॥ रक्तसूत्रोपवीतं च र

क्तचन्दनचर्चितं गृहारादेहि मे ज्ञानं ज्ञानदीयदिवाकर ॥ वस्त्रं ॥ यथा
लाभमिदं वस्त्रं भक्त्या दत्तं विभाकर प्रतीह वरवस्त्राणां भोगितं मां
सदा कुरु ॥ मालायुष्यं ॥ युष्यमालामिमां देव गृहाराधनवृद्धये ॥
दुर्गेश्वरस्य ममातीव दुःखितस्य दिवाकर ॥ रक्तयज्ञ ॥ मालाकोकन
कादीनां गृहाराकोकवास्यव ॥ सौभाग्यमतुलं देहि कल्पतां स
र्वदेहिनां ॥ दुर्वाक्षतयुष्यमालायुष्य ॥ मूलमंत्रेण आवाहनादि

वलिरुजा॥ उब्रुहोरोयेर॥ उमाहेश्वर्ये॥ उकोमार्ये॥ उवेष्टवे
र॥ वाराह्ये॥ उइन्द्रिये॥ उचामुद्राये॥ उमहालक्ष्ये॥ इत्या
दि॥ पुनर्मध्येयजनं॥ उसूर्याय॥ उखगमन्त्राय॥ उयूधे॥ उगभ
स्तिने॥ उहिरण्यगर्भाय॥ उविवस्वते॥ उतयनाय॥ उसवि
त्रे॥ उरवे॥ उलोकसाक्षिणे॥ उजगन्नेत्राय॥ धूय॥ धू
यंघ्राणेन्द्रियोनन्दमयादत्तं हि भोजनं सांयोगिकं च सहजं प्रती

ष्ठरोगनाशनं॥ दीय॥ उउज्ज्वलंदीपितंदीयंतमोनाशनहेतुकंप्रय
छामितयाग्रेहंतैसांयतिभास्कर॥ कलादि॥ डादिनघृतयकंचय
थाकालोद्भवंकलं यकृजांबुचर्जन्वीरं मिश्रतामूलं गृह्यतां॥ उ
नैवेद्य॥ वर्णागन्धरसोपेतं नैवेद्यं युष्टिर्वर्द्धनं॥ स्वाद्यं भोज्यं तथा येयं
लेह्यं चोष्यं च गृह्यताम्॥ तामूलं मूलं नैवेद्या॥ ततोर्ध्वम्॥ उअध्वं
नवहेत्यादि॥ अद्यादि॥ ताम्रयात्रात्तरं रक्तचन्दनाक्षतगर्भितं॥ दु

वर्क कसु समायुक्तं गृहाराधं दिवाकर ॥ ३ ॥ आयुर्वर्द्धि र्य शोव
द्धि रिति ॥ प्रतिष्ठा ॥ यदेतदुय नीतं ते यथा शक्त्या समन्वितं । तत
सर्वमेव मादित्य प्रीत्यास्वीकर्तुमर्हति ॥ ॥ मनोज्ञति ॥ मरुत ॥
स्तोत्रं यठेत् ॥ ३ ॥ नमः श्रीसूर्याय ॥ ३ ॥ ब्रह्म शं भु सु गरि वा स व व यु
स्त्वं सर्व लोके भव रो व्या षः सर्व शरी रिणां च हृदये हं स स्वरूप स्थि
तः । संसारार्णव तारणार्थ विजयः स प्रा भव रूरो ज्वलः शास्ता त्वं

जगतां हिताय गुरवे तुभ्यं नमः साम्प्रतम् ॥ अत्र गन्धादि ॥ मरुत
विसर्जनं ॥ देवदक्षिणा ॥ ब्राह्मणाय ज्ञानाय ॥ यजमानाभिषेकं ॥ चन्द
नाशीर्वाद् ॥ आचमनं ॥ न्यासः । सूर्यसाक्षि ॥ प्राशनं विदध्यात् ॥
इति सप्तमीव्रतविधिः समाप्ता ॥ सन्वत् १८८५ माघ शुक्ल ७ लिखितं ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ अद्यामुकस्य सर्वारिहविनाशकामनया यु
ष्टिविवर्द्धनक्रमेणा श्रीमृत्युंजयशिवस्तवं यद्विष्टो ॥ ॥ न्यासः ॥ ॐ
मुक्षीय मामृतात् ॐ अस्वाय कृद् ॥ ॐ त्र्यंबकं यजामहे कनिष्ठिका
भ्यां श ॥ ॐ सुगंधिं अनामिकाभ्यां श ॥ ॐ पुष्टिवर्द्धनं मध्यमाभ्यां श ॥ ॐ उ
र्वारुकमिव बर्जनीभ्यां श ॥ ॐ वंधनान्मृत्योर्मुखा गुह्याभ्यां श ॥ ॐ मुक्षीय मामृ
तात् केस्तलयुक्ताभ्यां श ॥ एवं हृदयादि ॥ ॥ ॐ जूं सः ॥ आधारादि

ॐ मृगासनाय श ॥ वृषासनाय श ॥ ध्यानं ॥ त्रिनेत्रं शंकरं शान्तं जगत्खण्डे
दुमण्डितं ॥ व्याघ्रचर्मधरं देवं नागदुहारभूषितं ॥ अंजलिः ॥ ॐ जूं सः त्र्यं
बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्द्धनं ॥ उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय
मामृतात् सो जूं ॐ नमः ॥ २ ॥ षोडशोपचारैः संयुज्य ॥ अथ रुद्राभि
षेकविधिना कलशादि पूजनं ॥ जलधारां ॥ अथ शतरुद्रोपठनं
आदौ मृत्युंजयमंत्रेण अष्टोत्तरशतवारं जप्यं ॥ १०८ ॥ ॐ गणानां

गणपति॥ समाप्ते पुनर्मृत्युं जय मंत्रेण अक्षोत्तरशतवारं जपेत्॥ १०८ ॥ मृ
 त्युं जय स्तोत्रं एकादशावृत्तिपाठं॥ १११ ॥ धूपदीपादिना यथाशक्ति पूजये
 त॥ जय स्तोत्रं॥ दक्षिणादानं॥ आशीर्वादः॥ उत्राम्बकं बजा महे॥ आसं
 पूर्ववत्॥ यथा ग्रहस्पदानं॥ सूर्यसाक्षी॥ अभिषेकः॥ शान्तिं क्रमेण यज
 मानेभ्य आशीर्वादः॥ ॥ उगच्छ २ परं स्थानं॥ उईशानसर्वविद्यानां॥ ॥
 निर्माल्यं॥ उचराणनाथाय २॥ उचराणे श्वर्ये २॥ ॥ जन्मलेन दोषे जनन

शान्तिः॥ अयमृत्यु भयेषु सर्वारिहृदोषोत्थितेपि। मृत्युभये राजभये
 पुष्टिवर्द्धने॥ ॥ इति त्र्यम्बकरूपविधानं॥ ॥ सामान्यविषये॥ उ
 शुक्लः शान्तः शिवः प्रसादयरमः सर्वज्ञः शक्तीश्वरः सानंतः मुरनायकश्च
 भगवान्संपूर्णकामप्रदः। वागीशो वरदस्तु वाग्भव यदो वा माधिव
 क्रे श्वरे व्याधीशो कविनाशकुक्षभयहा मृत्युञ्जय त्राहि मां॥ ॥
 उ श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीसूर्य उवाच॥ साम्ब साम्ब महाबाहो
 भृणु मे कवचं शुभं। त्रैलोक्यमंगलं नाम कथ्यते परमाद्भुतं॥ १

यद्ज्ञात्वा मनुविस्मयक फलमाप्नोति निश्चितं ॥ यद्भुत्वा च महोदेवो
 गणानामधिपो भवत ॥ २ ॥ यठना द्वारणा द्विष्टुः सर्वेषां पातकः सदा
 । एवमिन्द्रादयः सर्वे सर्वे श्रम्य मवाप्नुयुः ॥ ३ ॥ प्रणवो मे शिरः पातु
 घृणि मे पातु भालकं । सूर्यो व्यात्रय न द्दमादित्यः कार्ण पुग्नकां ॥ ४ ॥
 अष्टाक्षरो महा मंत्रः सर्वाभीष्टप्रदायकः । हों वीजं मे पुर्वं पातु हृदयं पु
 वने श्वरा ॥ ५ ॥ वद्वीजं विलगधि पातु मे गुह्यदेशकं । अक्षो मे प्र
 हा मंत्रः सर्वतंत्रेषु गोपितः ॥ ६ ॥ शिवो वह्निसमायुक्तो वा माक्षी विन्दुभू
 षितः । एकाक्षरो महा मंत्रः श्रीसूर्यस्पत्र कीर्तितः ॥ ७ ॥ गुह्याद्गुह्यत

रोमंत्रो वांछा विंतामणिः स्मृतः ॥ शीर्षादिपादपर्यन्तं सदा पातु मनुज
 मः ॥ ८ ॥ इति ते कथितं दिव्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभं । श्रीपदं कांतिदं नि
 त्यंधनारोप विवर्द्धनं ॥ ९ ॥ कुक्कुटो गशमनं महा व्याधि विनाशनं
 । त्रिसंध्यः पठेन्नित्यं मोगावलवान् भवेत् ॥ १० ॥ वरुणा किमिहोक्तो
 न यद्यन्मनसि वर्तते । तद्धत सर्वं भवत्येव कं वचस्पव धारणात् ॥ ११ ॥
 भूतप्रेतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः । बुद्धराक्षसवेतासा नैव तुष्टुम
 पि क्षमाः ॥ १२ ॥ दूरादेव पलायन्ते न स्पृशंतीर्त्तनादपि । भूर्जपत्रे सप्ता
 लिख्य रोचनां गुरुकुं कुमेः ॥ १३ ॥ रविर्वारिवसं कांत्यां सप्तम्यां च विशेष

त। धारयेत्ताधक श्रेष्ठस्त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ १४ ॥ त्रिलोह मध्यगं कृ
त्वा धारयेद्दक्षिणे भुजे शिखाया मथ वा कण्ठे सोऽपि सूर्यो न संशयः ॥ १५ ॥
इति ते कथितं ताम्रवैलोक्यमंगलाभिधानं कवचं दुर्लभं लोके तं वस्त्रे हा
स्य कीर्तितं ॥ १६ ॥ अज्ञात्वा कवचं दिव्यं योजयेत्सूर्यमंत्रकं सिद्धिर्न
जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ॥ १७ ॥ इति ब्रह्मया मले त्रैलोक्यमं
गतं नाम श्रीसूर्यकवचं समाप्तं ॥ ॥

अथ श्वेतवराहेत्यादि ॥ अमुकगोत्रा मुरुकेनाम मम पूर्वसंकल्पितामुक
पुत्रसंपूर्णां श्रीमद्भुः सूर्यप्रसन्नद्वारा यथाशास्त्रोक्तफलप्राप्ति
तदुत्तरकापी कवाचिके मानसिके सांसारिके सकलापापक्षयका
मो श्रीः सूर्याय निगमांशवे स पादलक्षपरिमितदीपपुज्ज्वलन
महं करिष्ये ॥ दीपं प्रज्वालयेत् ॥